International Journal of Recent Research and Review, Vol. XVII, Issue 3, September 2024
ISSN 2277 – 8322

विद्या भारती और राष्ट्रीयता: शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति की भावना का विकास

रामबाबू सोनी[1], डॉ. वेद प्रकाश शर्मा[2]
[1]शोधार्थी, महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी जयपुर
[2]प्रोफेसर शिक्षा विभाग, महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी जयपुर

प्रस्तावना

विद्या भारती, भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला संगठन, ने अपने स्थापना के समय से ही शिक्षा के क्षेत्र में सांस्कृतिक, नैतिक, और राष्ट्रीय दृष्टिकोण को प्रमुखता दी है। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय शिक्षा को केवल शैक्षिक ज्ञान तक सीमित न रखते हुए, चरित्र निर्माण और राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहित करना है। इस संगठन का मानना है कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा उपकरण है जो व्यक्तियों को उनके सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के प्रति सजग बनाता है और समाज के प्रति उनकी जिम्मेदारियों को समझने में मदद करता है। विद्या भारती ने भारतीय संस्कृति, परंपराओं, और नैतिकता को शिक्षा के मुख्य तत्वों में शामिल कर, छात्रों के व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दिया है। इसका उद्देश्य न केवल उच्च शैक्षिक मानकों को बनाए रखना है, बल्कि भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता के प्रति छात्रों की जागरूकता और समर्पण को भी बढ़ावा देना है। इस दृष्टिकोण के तहत, संगठन ने विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित की हैं, जो देशभक्ति की भावना को विकसित करने में सहायक होती हैं।

मुख्य शब्द: संगठन, विद्या भारती, भारतीय शिक्षा प्रणाली, जागरूकता, प्रोत्साहित, व्यक्तित्व, चरित्र निर्माण

1.परिचय

भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को संजोए रखने और राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल बनाने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। इस संदर्भ में, विद्या भारती ने एक विशेष भूमिका निभाई है। 1952 में स्थापित विद्या भारती एक गैर-सरकारी संगठन है, जिसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करना है। यह संगठन भारतीय शिक्षा को केवल शैक्षिक ज्ञान तक सीमित नहीं मानता, बल्कि इसे चरित्र निर्माण और देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करने का माध्यम मानता है। विद्या भारती की शिक्षा प्रणाली में भारतीय संस्कृति, परंपराओं और नैतिकता को केंद्र में रखा गया है। इसका मानना है कि शिक्षा केवल अकादमिक ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा मार्ग है जो बच्चों को राष्ट्रीयता, सामाजिक जिम्मेदारी और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ता है। इसके माध्यम से, विद्या भारती यह सुनिश्चित करती है कि छात्रों के दिलों में देशभक्ति की भावना गहराई से बसी हो, और वे अपने देश के प्रति गर्व

और सम्मान महसूस करें। इस लेख में हम विद्या भारती के माध्यम से शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति की भावना को कैसे विकसित किया जाता है, इसके विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे। विद्या भारती के कार्यक्रम, शिक्षण पद्धति, और उसके सामाजिक प्रभाव को समझना इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होगा।

1.1.दृष्टिकोण

विद्या भारती की स्थापना 1952 में हुई थी और यह भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने के उद्देश्य से कार्यरत है। इसका दृष्टिकोण भारतीय सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को शिक्षा प्रणाली में शामिल करना है। विद्या भारती का मानना है कि शिक्षा केवल बौद्धिक ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा साधन है जो व्यक्ति के चरित्र निर्माण और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारियों को समझने में सहायक होता है।

विद्या भारती का दृष्टिकोण निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित है:

संस्कृति और परंपरा का सम्मान: विद्या भारती भारतीय संस्कृति, परंपराओं और धार्मिक मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न हिस्सा मानती है। इसका उद्देश्य छात्रों को उनके सांस्कृतिक विरासत से जोड़ना और भारतीय सभ्यता की गहराई से परिचित कराना है।

नैतिक शिक्षा का महत्व: इस संगठन के अनुसार, नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण शिक्षा का अभिन्न हिस्सा हैं। विद्या भारती यह मानती है कि एक अच्छा नागरिक बनने के लिए छात्रों को सच्चाई, ईमानदारी, और सामाजिक दायित्व की शिक्षा दी जानी चाहिए।

देशभक्ति की भावना: विद्या भारती शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करती है। इसके स्कूलों में छात्रों को स्वतंत्रता संग्राम के नायकों, राष्ट्रीय नायकों, और भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में जानकारी दी जाती है, ताकि वे अपने देश के प्रति गर्व और सम्मान महसूस कर सकें।

1.2.उद्देश्य

विद्या भारती के उद्देश्य व्यापक और विविध हैं, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं:

सांस्कृतिक पुनरुद्धार: विद्या भारती का मुख्य उद्देश्य भारतीय संस्कृति और परंपराओं को पुनर्जीवित करना है। इसके माध्यम से, संगठन भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को छात्रों में समाहित करने का प्रयास करता है, ताकि वे अपनी सांस्कृतिक पहचान को समझ सकें और उसे संरक्षित कर सकें।

चरित्र निर्माण: विद्या भारती का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों के चरित्र निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना है। इसके तहत, नैतिक शिक्षा, अनुशासन, और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति सजगता को बढ़ावा दिया जाता है, ताकि छात्र एक जिम्मेदार और सुसंस्कृत नागरिक बन सकें।

समाज में जागरूकता: विद्या भारती का लक्ष्य समाज के विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता फैलाना भी है। संगठन सामाजिक उत्थान, स्वच्छता, और शिक्षा के प्रति जागरूकता के लिए विभिन्न कार्यक्रम

आयोजित करता है, जिससे छात्रों और समाज के बीच एक सकारात्मक बदलाव लाया जा सके।

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार: विद्या भारती की कोशिश है कि वह शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाए। इसके तहत, आधुनिक शिक्षा पद्धतियों और संसाधनों का उपयोग कर उच्च स्तर की शिक्षा प्रदान की जाती है, जो छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है।

राष्ट्रीयता का संवर्धन: विद्या भारती की शिक्षा प्रणाली में देशभक्ति और राष्ट्रीयता को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसके माध्यम से, छात्रों को अपने देश के प्रति लगाव और सम्मान की भावना को गहरा करने का प्रयास किया जाता है।

2.शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति का विकास

देशभक्ति की भावना का विकास शिक्षा के माध्यम से एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली प्रक्रिया है। विद्या भारती इस क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाते हुए छात्रों को एक ऐसे दृष्टिकोण से शिक्षित करने का प्रयास करती है जो न केवल उनके बौद्धिक विकास को सुनिश्चित करता है, बल्कि उन्हें अपनी सांस्कृतिक पहचान, राष्ट्रीय गौरव, और सामाजिक जिम्मेदारियों से भी परिचित कराता है। शिक्षा के माध्यम से देशभक्ति के विकास के निम्नलिखित प्रमुख पहलू हैं:

1.सांस्कृतिक और ऐतिहासिक शिक्षा सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश: विद्या भारती के स्कूलों में भारतीय संस्कृति और परंपराओं का विशेष महत्व दिया जाता है। छात्र भारतीय त्योहारों, परंपराओं, और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान को समझते हैं और उसका सम्मान करते हैं। इससे उनके मन में अपने देश के प्रति गर्व और सम्मान की भावना विकसित होती है।

इतिहास की शिक्षा: स्वतंत्रता संग्राम, महान भारतीय व्यक्तित्वों, और भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त कर छात्रों में देश के प्रति एक गहरी समझ और प्रेम विकसित होता है। विद्या भारती के पाठ्यक्रम में इन ऐतिहासिक घटनाओं और नायकों की कहानियों को शामिल किया जाता है, जो छात्रों को प्रेरित करती हैं और देशभक्ति की भावना को प्रबल करती हैं।

1.नैतिक और चरित्र निर्माण नैतिक शिक्षा: विद्या भारती के स्कूलों में नैतिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। छात्रों को सच्चाई, ईमानदारी, और सामाजिक जिम्मेदारियों के महत्व के बारे में सिखाया जाता है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से, छात्रों को यह समझाया जाता है कि एक अच्छा नागरिक बनने के लिए क्या गुण आवश्यक हैं और ये गुण समाज और देश के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं।

चरित्र निर्माण: चरित्र निर्माण की दिशा में, विद्या भारती छात्रों को अनुशासन, परिश्रम, और सहनशीलता जैसे गुणों से लैस करती है। यह उन्हें समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने और निभाने के लिए प्रेरित करता है, जिससे देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहन मिलता है।

2.देशभक्ति के कार्यक्रम और उत्सव राष्ट्रीय पर्वों की मनाई: विद्या भारती के स्कूलों में स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, और महात्मा गांधी जयंती जैसे राष्ट्रीय पर्व बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाए

जाते हैं। इन अवसरों पर छात्रों को देशभक्ति के गीत, नृत्य, और नाटक प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह छात्रों में देशभक्ति की भावना को जीवंत करता है और उन्हें अपने देश के प्रति गर्व महसूस कराता है। समाज सेवा और योगदान: विद्या भारती के स्कूलों में सामाजिक सेवा के कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं, जैसे कि स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, और गरीबों की सहायता। इन गतिविधियों के माध्यम से, छात्रों को समाज के उत्थान और देश की सेवा में भाग लेने का अवसर मिलता है, जो उनके देशभक्ति की भावना को और भी गहरा करता है।

3. नेतृत्व और जिम्मेदारी की भावना नेतृत्व कौशल: विद्या भारती के स्कूलों में छात्रों को नेतृत्व कौशल और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ और अवसर प्रदान किए जाते हैं। स्कूलों में छात्र परिषद, क्लब, और विभिन्न आयोजनों के माध्यम से छात्रों को नेतृत्व की भूमिका निभाने का मौका मिलता है, जिससे वे समाज और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हैं और उन्हें निभाने के लिए प्रेरित होते हैं। सहभागिता और टीम वर्क: टीम वर्क और सहभागिता के माध्यम से, छात्रों को एकजुट होकर काम करने और दूसरों के साथ सहयोग करने की आदत डालने पर जोर दिया जाता है। यह उन्हें एकता और सहयोग की भावना से जोड़ता है, जो एक मजबूत और एकजुट राष्ट्र की नींव रखता है।

4.आधुनिक तकनीक और नवाचार तकनीकी शिक्षण: विद्या भारती ने आधुनिक तकनीक और नवाचार को अपनाते हुए, छात्रों को डिजिटल शिक्षा के माध्यम से भी देशभक्ति की भावना विकसित करने के प्रयास किए हैं। डिजिटल संसाधनों और ऑनलाइन प्लेटफार्मों के माध्यम से, छात्रों को भारतीय संस्कृति, इतिहास, और समाज की गहराई से जानकारी प्रदान की जाती है। आवश्यक बदलाव: विद्या भारती लगातार शिक्षा प्रणाली में आवश्यक बदलाव और सुधार करती रहती है, ताकि वह समय की आवश्यकता के अनुसार अपने कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों को अद्यतित रख सके और छात्रों में देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित कर सके।

3.शिक्षक प्रशिक्षण और भूमिका

शिक्षक शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न हिस्सा होते हैं, और उनकी भूमिका केवल शिक्षण तक सीमित नहीं होती। शिक्षक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, विशेषकर जब बात देशभक्ति और चरित्र निर्माण की होती है। विद्या भारती के संदर्भ में, शिक्षक प्रशिक्षण और उनकी भूमिका को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह संगठन शिक्षकों को केवल शिक्षण विधियों में प्रशिक्षित नहीं करता, बल्कि उन्हें सांस्कृतिक, नैतिक और राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति भी सजग बनाता है।

शिक्षक प्रशिक्षण का उद्देश्य विद्या भारती के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का उद्देश्य केवल शिक्षण विधियों को सिखाना नहीं है, बल्कि निम्नलिखित लक्ष्यों को भी पूरा करना है:

1.सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों की समझ: शिक्षकों को भारतीय संस्कृति, परंपराओं और नैतिक मूल्यों की गहरी समझ प्रदान की जाती है,

ताकि वे इन्हें कक्षा में प्रभावी तरीके से प्रस्तुत कर सकें और छात्रों में इन मूल्यों को विकसित कर सकें। व्यावसायिक कौशल का विकास: शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण विधियों, तकनीकी संसाधनों, और शिक्षण-शासन कौशल में प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे वे बेहतर तरीके से पढ़ा सकें और छात्रों की विविध जरूरतों को पूरा कर सकें। चरित्र निर्माण: शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में चरित्र निर्माण और नैतिक शिक्षा पर भी जोर दिया जाता है, ताकि शिक्षक अपने छात्रों को अच्छे नागरिक बनने के लिए प्रेरित कर सकें।

2. प्रशिक्षण कार्यक्रम और विधियाँ कार्यशालाएँ और सेमिनार: विद्या भारती नियमित रूप से कार्यशालाएँ, सेमिनार, और प्रशिक्षण सत्र आयोजित करती है, जिसमें शिक्षकों को नवीनतम शिक्षण विधियों, सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षा, और प्रबंधन कौशल पर प्रशिक्षित किया जाता है। इन सत्रों के माध्यम से, शिक्षक अपने कौशल को अद्यतित रख सकते हैं और शिक्षा में नवीनतम प्रगति को समझ सकते हैं। मॉड्यूल और पाठ्यक्रम: प्रशिक्षण कार्यक्रमों में विशेष मॉड्यूल और पाठ्यक्रम शामिल होते हैं, जो शिक्षकों को भारतीय सांस्कृतिक धरोहर, इतिहास, और नैतिक शिक्षा के महत्व को समझाने में मदद करते हैं। इन मॉड्यूल्स में विभिन्न केस स्टडीज, उदाहरण, और शिक्षण विधियाँ शामिल होती हैं, जो शिक्षकों की तैयारी को मजबूत बनाती हैं। गुणात्मक सुधार: प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों को गुणात्मक सुधार के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता है। इसमें शिक्षण के विविध पहलुओं, जैसे कि कक्षा प्रबंधन, छात्रों के मानसिक और भावनात्मक विकास, और प्रभावी संचार कौशल को सुधारने के तरीके शामिल होते हैं।

3. शिक्षकों की भूमिका सांस्कृतिक शिक्षक: विद्या भारती के शिक्षक केवल पाठ्यक्रम नहीं पढ़ाते बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपराओं का भी प्रचार करते हैं। वे छात्रों को भारतीय त्योहारों, परंपराओं, और सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्व के बारे में सिखाते हैं, जिससे छात्रों में अपनी सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीयता के प्रति सम्मान उत्पन्न होता है। नैतिक मार्गदर्शक: शिक्षक नैतिक शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे छात्रों को सच्चाई, ईमानदारी, और सामाजिक जिम्मेदारियों की शिक्षा देते हैं। नैतिक शिक्षा के माध्यम से, शिक्षक छात्रों के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं और उन्हें समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझाते हैं। प्रेरक और मार्गदर्शक: शिक्षक छात्रों के प्रेरक होते हैं और उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। वे छात्रों को उनके लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रेरित करते हैं और उनके व्यक्तिगत और शैक्षणिक विकास में सहायता करते हैं। समाज सुधारक: विद्या भारती के शिक्षक समाज के विभिन्न मुद्दों पर जागरूकता फैलाने और समाज के उत्थान में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। वे सामाजिक सेवा, स्वच्छता अभियानों, और अन्य समाज सुधार अभियानों में छात्रों को शामिल करते हैं, जिससे समाज में सकारात्मक बदलाव आता है।

4. चुनौतियाँ और समाधान संसाधनों की कमी: कई बार शिक्षकों को संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है, जैसे कि उचित प्रशिक्षण सामग्री

और तकनीकी संसाधनों की कमी। इसका समाधान प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार और नवीनतम तकनीक का उपयोग करके किया जा सकता है। विविधता और समावेश: भारत की विविधता के कारण, शिक्षकों को विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमियों के छात्रों के साथ काम करने की चुनौती होती है। इसके समाधान के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सांस्कृतिक संवेदनशीलता और समावेशिता पर जोर दिया जाता है। लगातार अद्यतन: शिक्षकों को लगातार नए शिक्षण विधियों और तकनीकी प्रगति से अपडेट रहना पड़ता है। इसके लिए, विद्या भारती नियमित रूप से प्रशिक्षण सत्र और अपडेटेड संसाधनों की सुविधा प्रदान करती है।

4.भविष्य की दिशा

विद्या भारती का भविष्य उज्ज्वल नजर आता है। संगठन ने पहले ही शिक्षा के क्षेत्र में कई सकारात्मक बदलाव किए हैं और आगे भी यह जारी रहेगा।

प्रौद्योगिकी का समावेश: भविष्य में विद्या भारती आधुनिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करके अपनी शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास करेगी।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार: विद्या भारती का लक्ष्य है कि वह अपनी शिक्षा प्रणाली को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रस्तुत करे, जिससे विश्वभर में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार हो सके।

5.निष्कर्ष

शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रभक्ति की भावना के विकास में विद्या भारती ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संगठन ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों को प्रमुखता देते हुए एक ऐसा दृष्टिकोण अपनाया है, जो न केवल विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास को सुनिश्चित करता है, बल्कि उनमें अपने देश के प्रति गौरव एवं सम्मान की भावना भी उत्पन्न करता है। विद्या भारती विद्यालयों में सांस्कृतिक शिक्षा, नैतिक प्रशिक्षण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे विद्यार्थियों में राष्ट्रभक्ति की गहरी भावना विकसित होती है। इसके अलावा संगठन के प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं शिक्षण पद्धतियां शिक्षकों को इस दिशा में सशक्त बनाती हैं। भविष्य में विद्या भारती द्वारा अपनाए गए नवीनतम तकनीकी उपाय, वैश्विक दृष्टिकोण एवं सांस्कृतिक संरक्षण की पहल इस दिशा में और भी अधिक कारगर सिद्ध होंगी। संक्षेप में, विद्या भारती ने शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रवाद एवं देशभक्ति को बढ़ावा देने में अद्वितीय योगदान दिया है, जो एक जागरूक एवं सशक्त नागरिक समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध हो रहा है।

6.संदर्भ

1. बौर्डियू, पी., और पासेरॉन, जे.सी. (1990), शिक्षा, समाज और संस्कृति में प्रजनन (दूसरा संस्करण), सेज प्रकाशन.

2. कैम्पबेल, डी.ई. (2006). हम वोट क्यों देते हैं: स्कूल और समुदाय हमारे नागरिक जीवन को कैसे आकार देते हैं। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

3. कूम्ब्स, पी.एच., और अहमद, एम. (1974)। ग्रामीण गरीबी पर हमलाः अनौपचारिक शिक्षा कैसे मदद कर सकती है। जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस।

4. कोरक, एम. (2013). आय असमानता, अवसर की समानता और अंतर-पीढ़ीगत गतिशीलता। जर्नल ऑफ इकोनॉमिक पर्सपेक्टिव्स, 27(3), 79-102

5. डेवी, जे. (1916). लोकतंत्र और शिक्षाः शिक्षा के दर्शन का परिचय. मैकमिलन.

6. दुर्खीम. ई. (1956). शिक्षा और समाजशास्त्र फ्री प्रेस.

7. फ्रेयर, पी. (1970), उत्पीड़ितों की शिक्षाशास्त्र. सातत्य.

8. प्साचरोपोलोस, जी., और पैट्रिनोस, एवए (2018)1 शिक्षा में निवेश का प्रतिफल: वैश्विक साहित्य की दशकीय समीक्षा। शिक्षा अर्थशास्त्र, 26(5), 445-4581

9. राजपूत, जे.एस. (2020). भारतीय शिक्षाः प्राचीन परंपराएँ और आधुनिक चुनौतियाँ. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

10. शुल्ट्ज, टी. डब्लू, (1961), मानव पूंजी में निवेश. अमेरिकी आर्थिक समीक्षा, 51(1), 1-17.

11. स्मिथ, जे. (2018)1 शिक्षा की व्युत्पत्तिः सीखने की जड़ों का पता लगाना। जर्नल ऑफ एजुकेशनल विश्व आर्थिक मंच) (2020)। नौकरियों का भविष्य रिपोर्ट 20201 विश्व आर्थिक मंच।

12. जुल. जेई (2002)1 मस्तिष्क को बदलने की कला सीखने की जीवविज्ञान की खोज करके शिक्षण को समृद्ध करना। स्टाइलस पब्लिशिंग।

13. बेन्स, जे. (2007) प्राचीन मिस्र में दृश्य और लिखित संस्कृति ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

14. कार्टलेज, पी. (2001), स्पार्टन रिफ्लेक्शंस, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.

15. दत्त. एस. (1962). भारत के बौद्ध भिक्षु और मठः उनका इतिहास और भारतीय संस्कृति में उनका योगदान, जॉर्ज एलन और अनविन

16. एत्मन, बी.ए. (2000). लेट इंपीरियल चाइना में सिविल परीक्षाओं का सांस्कृतिक इतिहास. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया प्रेस.

17. जैगर, डब्ल्यू, (1986). पैडियाः ग्रीक संस्कृति के आदर्श ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

18. जैनसेन, आर. एम., और जैनसेन, जे.जे. (1990), प्राचीन मिस में पले-बढ़े. द रुबिकॉन

19. कास्टर, आर.ए. (1988), भाषा के संरक्षकः प्राचीन काल में व्याकरणविद और समाज यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस.

20. किपास्र्की, पी. (1979), पाणिनि एक विभिन्नतावादी के रूप में। एमआईटी प्रेस.

21. केमर, एस.एन. (1949)। स्कूल के दिन: एक सुमेरियन स्चना जो एक लेखक की शिक्षा से

संबंधित है। जर्नल ऑफ द अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी, 69(4), 199-2151

22. ती. टीएचसी (2000) पारंपरिक चीन में शिक्षाः एक इतिहास बिल. मार्क, एच. आई. (1956). प्राचीन काल में शिक्षा का इतिहास, शीड और वार्ड

23. म्यूलेनबेरड, जी.जे. (1999-20025) भारतीय चिकिला साहित्य का इतिहास। श्रोनिंगन ओरिएंटल स्टडीज।

24. मुखर्जी, आर. के. (1947), प्राचीन भारतीय शिक्षाः ब्राह्मणवादी और बौद्ध, मोतीलाल बनारसीदास

25. प्लॉफकर के (1) भारत में गणित प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस

26. रंगाचार्य, ए. (1996) नाट्यशास्त्र मुंशीराम मनोहरतात प्रकाशक

27. रॉबसन, ई. (2001). टेबलेट हाउसः पुराने बेबीलोनियन निप्पुर में एक तिपिक स्कूत। रिव्यू डी असीरियोलॉजी एट ही आर्कियोलॉजी ओरिएंटेल, 95(1), 39-66

28. सुब्बारायप्पा, वी.वी. 1980 भारतीय खगोल विज्ञान एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। कॉस्मिक पर्सपेक्टिव्स में । पृष्ठ 25-40)। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

29. अरबिंदो, एस (1956) शिक्षा पर बी अरबिंदो आश्रम प्रेस

30. बैगली, डब्ल्यू, सी. 11934 शिक्षा और उभरता हुआ आदमी थॉमस नेल्सन एड संस

31. चक्रवर्ती, एस. के, और चक्रवर्ती डी (2008) प्रबंधन में आध्यामिकता साधन या साध्यः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।